NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 17-10-2024

विषय सूची

दो अरब महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा का अभाव: संयुक्त राष्ट्र महिला

2030 तक 'शून्य भूख' लक्ष्य की प्राप्ति खतरे में

पूर्वोत्तर: भारत के विकास के लिए महत्वपूर्ण

भारत का सेमीकंडक्टर बाजार 2030 तक 100 बिलियन डॉलर से अधिक हो जाएगा

पराली जलाने का मुद्दा

संक्षिप्त समाचार

अंतर्राष्ट्रीय 6G संगोष्ठी/परिसंवाद

अमृत फार्मेसीज (AMRIT Pharmacies)

फाइव आइज एलायंस

हैंड-इन-हैंड पहल

'शून्य दोष, शून्य प्रभाव' पहल

रबी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य

मेचाजिला

ओस्सिफिकेशन टेस्ट

INS समर्थक

राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (NSG)

काला हिरण (एंटीलोप सर्विकाप्रा)

दो अरब महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा का अभाव: संयुक्त राष्ट्र महिला

संदर्भ

- संयुक्त राष्ट्र महिला द्वारा जारी विकास में महिलाओं की भूमिका पर विश्व सर्वेक्षण रिपोर्ट में सामाजिक संरक्षण में बढ़ते लिंग अंतर पर प्रकाश डाला गया है।

About

- रिपोर्ट से पता चलता है कि चिंताजनक रूप से दो अरब महिलाएं और लड़कियां किसी भी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा तक पहुंच से वंचित हैं। यह सतत विकास लक्ष्य 5 (SDG 5) की दिशा में प्रगति को जोखिम में डाल रहा है।
- **लैंगिक आधार पर गरीबी:** 25 से 34 वर्ष की महिलाओं में अत्यधिक गरीबी में रहने की समान आयु वर्ग के पुरुषों की तुलना में 25 प्रतिशत अधिक संभावना होती है।
- संघर्ष और जलवायु परिवर्तन इस असमानता को बढ़ा रहे हैं, स्थिर क्षेत्रों की तुलना में नाजुक वातावरण में रहने वाली महिलाओं की अत्यधिक गरीबी में रहने की संभावना 7.7 गुना अधिक है।
- **मातृत्व सुरक्षा:** विश्व स्तर पर, 63 प्रतिशत से अधिक महिलाएँ अभी भी मातृत्व लाभ तक पहुँच के बिना बच्चे को जन्म देती हैं, उप-सहारा अफ्रीका में यह आंकड़ा 94 प्रतिशत तक पहुँच गया है।

भारतीय परिदृश्य

- **स्वास्थ्य और पोषण:** राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) से पता चलता है कि 23.3% महिलाएं (15-49 वर्ष) कुपोषित हैं, और 57% महिलाएं एनीमिया से पीड़ित हैं।
    - भारत में मातृ मृत्यु अनुपात (MMR) 2023 में प्रति 100,000 जीवित जन्मों पर 97 था, जो 2014 में 130 से कम है।
- **लैंगिक आधार पर गरीबी:** ऑक्सफैम के अनुसार, भारत में 63% महिलाओं को अवैतनिक देखभाल संबंधी जिम्मेदारियों का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी आर्थिक भागीदारी सीमित हो जाती है।
- **श्रम बल में भागीदारी:** भारत में, 15 वर्ष और उससे अधिक आयु की केवल लगभग 37% महिलाएँ कार्यबल में भाग लेती हैं (लगभग 73% पुरुषों की तुलना में)।
- **शिक्षा में लिंग अंतर:** NFHS-5 के अनुसार, 84.7% पुरुषों की तुलना में 70.3% महिलाएं साक्षर हैं।

महिलाओं की असुरक्षा के कारण

- सांस्कृतिक अपेक्षाएँ और पितृसत्तात्मक मानदंड महिलाओं के औपचारिक रोजगार में भाग लेने के अवसरों को प्रतिबंधित करते हैं और आर्थिक स्वतंत्रता तक उनकी पहुंच में बाधा डालते हैं।
- **शैक्षिक असमानताएँ:** कम उम्र में विवाह, स्कूलों में लिंग आधारित हिंसा और स्वच्छता सुविधाओं की कमी जैसी सांस्कृतिक प्रथाएँ शिक्षा में लड़कियों की उपस्थिति और प्रतिधारण दर को असंगत रूप से प्रभावित करती हैं।
- **अनौपचारिक क्षेत्र रोजगार:** महिलाओं का एक बड़ा प्रतिशत अनौपचारिक क्षेत्रों में कार्यरत है, जिनकी विशेषता कम वेतन, अनियमित घंटे और रोजगार सुरक्षा की कमी है।

सरकारी पहल

- **बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (BBBP):** गिरते बाल लिंग अनुपात को संबोधित करने और बालिकाओं की शिक्षा और अस्तित्व को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया।

- **प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (PMMVY):** एक मातृत्व लाभ योजना जो गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं को सुरक्षित प्रसव और उचित पोषण सुनिश्चित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
- **उज्ज्वला योजना:** पारंपरिक चूल्हे के धुएं से होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं को कम करने के लिए गरीबी रेखा से नीचे (BPL) परिवारों की महिलाओं को मुफ्त LPG कनेक्शन प्रदान करती है।
- **पोषण अभियान:** इस मिशन का उद्देश्य बच्चों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए पोषण परिणामों में सुधार करना है।
- **महिलाओं के लिए डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम:** यह प्रधान मंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान (PMGDISHA) का हिस्सा है और महिलाओं को ई-गवर्नेंस सेवाओं और वित्तीय प्लेटफार्मों तक पहुंचने का अधिकार देता है, जिससे उन्हें डिजिटल अर्थव्यवस्था में भाग लेने में सहायता मिलती है।
- वन स्टॉप सेंटर योजना (सखी केंद्र) का उद्देश्य हिंसा से प्रभावित महिलाओं को एक ही छत के नीचे पुलिस सुविधा, चिकित्सा सहायता, कानूनी सहायता और कानूनी परामर्श, मनो-सामाजिक परामर्श, अस्थायी आश्रय आदि जैसी एकीकृत सेवाओं की सुविधा प्रदान करना है।

आगे की राह

- महिलाओं की ख़राब स्थिति गहरी जड़ें जमा चुके पितृसत्तात्मक मानदंडों, भेदभावपूर्ण प्रथाओं, आर्थिक असमानताओं और महिलाओं की विशिष्ट आवश्यकताओं को संबोधित करने वाली लक्षित नीतियों की कमी का परिणाम है।
- इन प्रणालीगत मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें लिंग-उत्तरदायी सामाजिक सुरक्षा नीतियों को बढ़ावा देने के साथ-साथ शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और कानूनी सुरक्षा तक पहुंच में सुधार शामिल है।
- लैंगिक समानता को आगे बढ़ाने, महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने और भारत में समावेशी और सतत विकास हासिल करने के लिए जेंडर बजटिंग एक महत्वपूर्ण उपकरण है।

Source: DTE

2030 तक 'शून्य भूख' लक्ष्य की प्राप्ति ख़तरे में

संदर्भ

- युद्धों, जलवायु परिवर्तन और आर्थिक संकटों के कारण 2030 तक विश्व से भूखमरी को समाप्त करने का संयुक्त राष्ट्र का लक्ष्य प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण प्रतीत होता है।

परिचय

- संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (SDG) का लक्ष्य 2, 2030 तक भूख से मुक्त विश्व बनाने के बारे में है।
- विश्व के लिए 2024 का वैश्विक भूख सूचकांक स्कोर 18.3 है, जिसमें 42 देश अभी भी भयावह या गंभीर भूख का सामना कर रहे हैं।
- उप-सहारा अफ्रीका और दक्षिण एशिया में भूख सबसे गंभीर है, जहाँ संकट मानवीय स्तर तक बढ़ गया है।
- 2016 से भूख को कम करने की दिशा में बहुत कम प्रगति हुई है, और 2030 की लक्ष्य तिथि तक भूख को शून्य करने की संभावनाएँ बहुत कम हैं।

भारत में खाद्य असुरक्षा

- ग्लोबल हंगर इंडेक्स (GHI) 2024 में भारत को 127 देशों में से 105वें स्थान पर रखा गया है, जो इसे भूख के स्तर के लिए "गंभीर(serious)" श्रेणी में रखता है।
- विश्व में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति 2023 रिपोर्ट में कहा गया है कि 2021-22 में भारत में लगभग 224 मिलियन लोगों को मध्यम या गंभीर खाद्य असुरक्षा का सामना करना पड़ा।

चुनौतियाँ

- **युद्ध और संघर्ष:** लाल सागर जैसे क्षेत्रों में चल रहे संघर्ष, आपूर्ति श्रृंखलाओं और भोजन तक पहुँच को बाधित करते हैं, जिससे गंभीर भूखमरी की स्थिति उत्पन्न होती है, विशेषकर उप-सहारा अफ्रीका और दक्षिण एशिया जैसे कमज़ोर क्षेत्रों में।
- **जलवायु परिवर्तन:** जलवायु परिवर्तन के कारण चरम मौसम की घटनाएँ, सूखा, बाढ़ और कृषि पैटर्न में बदलाव खाद्य उत्पादन और उपलब्धता को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं।
- **क्षेत्रीय असमानताएँ:** उप-सहारा अफ्रीका और दक्षिण एशिया में भूख सबसे गंभीर बनी हुई है, जहाँ स्थितियाँ मानवीय संकटों तक बढ़ गई हैं, जिससे इन क्षेत्रों में भूख को प्रभावी ढंग से संबोधित करना कठिन हो गया है।
- कोविड-19 महामारी ने खाद्य असुरक्षा को बढ़ा दिया है, जिससे कई परिवार गरीबी में चले गए हैं और उनके लिए पर्याप्त भोजन तक पहुँच पाना कठिन हो गया है।

2030 तक भुखमरी को समाप्त करने के लिए भारत के प्रयास

- **मध्याह्न भोजन कार्यक्रम:** इस कार्यक्रम का उद्देश्य सरकारी, स्थानीय निकाय और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में बच्चों की पोषण स्थिति में सुधार करते हुए नामांकन, प्रतिधारण और उपस्थिति को बढ़ावा देना है।
- **खाद्य सुदृढ़ीकरण:** सरकार सार्वजनिक वितरण प्रणाली के हिस्से के रूप में फोर्टिफाइड चावल, गेहूं का आटा और खाद्य तेलों को बढ़ावा देती है।
- **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013:** यह अधिनियम लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (TPDS) के तहत सब्सिडी वाले खाद्यान्न प्राप्त करने के लिए ग्रामीण जनसँख्या के 75% और शहरी जनसँख्या के 50% तक कवरेज प्रदान करता है।
- **पोषण ट्रैकर:** महिला और बाल विकास मंत्रालय ने पोषण ट्रैकर ICT एप्लिकेशन को एक प्रमुख शासन उपकरण के रूप में विकसित किया है।
    - यह बच्चों में ऊंचाई, वजन, लिंग और उम्र के आधार पर स्टंटिंग, वेस्टिंग, कम वजन और मोटापे का गतिशील रूप से आकलन करने के लिए दिन-आधारित जेड-स्कोर के साथ WHO की विस्तारित तालिकाओं का उपयोग करता है।
- कोविड-19 प्रकोप के कारण होने वाले आर्थिक व्यवधानों के कारण गरीबों को होने वाली कठिनाइयों को कम करने के लिए प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना शुरू की गई थी।
- सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0 में देश में कुपोषण की समस्या के समाधान के लिए प्रत्यक्ष लक्षित हस्तक्षेप के रूप में पोषण अभियान, आंगनवाड़ी सेवाएं और किशोरियों के लिए योजना जैसी प्रमुख योजनाएं शामिल हैं।

आगे की राह

- **मानवीय सहायता:** संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में मानवीय सहायता के लिए अधिक वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराना ताकि खाद्य वितरण और पोषण संबंधी सहायता सुनिश्चित की जा सके।
- **संवहनीय कृषि:** ऐसी कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना जो जलवायु परिवर्तन के आघातों का सामना कर सकें।
- **लक्षित सहायता कार्यक्रम:** संघर्षों से प्रभावित कमज़ोर जनसँख्या के लिए लक्षित खाद्य सहायता कार्यक्रम विकसित करना, जिसमें नकद हस्तांतरण और खाद्य वाउचर शामिल हैं।

Source: DTE

पूर्वोत्तर: भारत के विकास के लिए महत्वपूर्ण

समाचार में

- भारत के उपराष्ट्रपति ने कहा कि पूर्वोत्तर राष्ट्रीय एकता, आर्थिक प्रगति और सांस्कृतिक सार के लिए महत्वपूर्ण है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र के बारे में

- इसमें आठ पहाड़ी राज्य शामिल हैं: अरुणाचल प्रदेश, असम, मिजोरम, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा, सिक्किम और नागालैंड।
- यह चीन, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान और म्यांमार के साथ 5,812 किलोमीटर लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा साझा करता है।
- यह संकीर्ण सिलीगुड़ी गलियारे के माध्यम से मुख्य भूमि भारत से जुड़ा हुआ है, जिसे 'चिकन नेक' के रूप में भी जाना जाता है, जो सिर्फ 22 किमी लंबा है।
- इसका सामाजिक-जातीय परिदृश्य विविध है, यहाँ कई आदिवासी समूह रहते हैं जो लगभग 220 भाषाएँ बोलते हैं, जिनमें से प्रत्येक की सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताएँ अद्वितीय हैं।

महत्त्व

- **रणनीतिक स्थान:** यह आसियान बाजारों के लिए प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है, जिससे दक्षिण-पूर्व एशिया तक आसान पहुँच की सुविधा मिलती है।
- **प्रचुर प्राकृतिक संसाधन:** यह तेल, गैस, कोयला, खनिज, लकड़ी, औषधीय पौधों और जल संसाधनों में समृद्ध है, जो औद्योगिक दोहन के अवसर प्रदान करता है।
- **भारत का ग्रीन हब:** यह हरे-भरे जंगलों और जैव विविधता का दावा करता है, जो इसे इकोटूरिज्म एवं कृषि आधारित उद्योगों के लिए आदर्श बनाता है।
- **विविध सांस्कृतिक विरासत:** यह अद्वितीय जातीय समुदायों और परंपराओं का घर है, जो पर्यटन एवं हस्तशिल्प में निवेश के अवसर प्रस्तुत करता है।
- **कम लागत वाला विनिर्माण केंद्र:** भारत और विश्व स्तर पर अन्य क्षेत्रों की तुलना में प्रतिस्पर्धी श्रम लागत।
- **कुशल कार्यबल:** अंग्रेजी में कुशल युवा, शिक्षित कार्यबल की विशेषता है।
- **उभरते उपभोक्ता बाजार:** बढ़ती आय और शहरीकरण के साथ बढ़ता उपभोक्ता आधार, महत्वपूर्ण व्यावसायिक क्षमता उत्पन्न कर रहा है।

मुद्दे और चुनौतियाँ

- ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों ने आदिवासी हितों की रक्षा के लिए सीमाएँ बनाईं, जो स्वतंत्र भारत में भी दृढ़ हैं, जिसका प्रभाव सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए आर्थिक विकास पर पड़ा है।
- इस क्षेत्र को अलगाव, राजनीतिक हिंसा, जातीय संघर्ष और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे का सामना करना पड़ रहा है, जिससे राष्ट्रीय विकास ढाँचे में इसका एकीकरण जटिल हो गया है।
- पूर्वोत्तर में कनेक्टिविटी परियोजनाओं में देरी हो रही है, जिसके कारण समय पर पूरा होना और चल रही पहलों और चुनौतियों का विस्तृत मूल्यांकन करना ज़रूरी है।
- सार्वजनिक प्लेटफ़ॉर्म पर निराधार जानकारी के प्रसार को लेकर चिंताएँ व्यक्त की जा रही हैं

पहल

- लुक ईस्ट और एक्ट ईस्ट नीतियों ने क्षेत्र में संचार, संपर्क और हवाई अड्डे के विकास को बढ़ाया।
- सरकारी प्रोत्साहन व्यवसाय विकास को प्रोत्साहित करने के लिए कर अवकाश और सब्सिडी सहित विभिन्न प्रोत्साहन प्रदान करते हैं।
- केंद्रीय बजट 2024 आर्थिक, औद्योगिक और कृषि विकास को प्राथमिकता देकर भारत के लिए "विकसित भारत" को प्राप्त करने के लिए एक रोडमैप की रूपरेखा तैयार करता है, विशेष रूप से पूर्वोत्तर में युवाओं, महिलाओं और आदिवासी समुदायों को लाभान्वित करता है।
    - बजट पीएम विश्वकर्मा और स्टैंड अप इंडिया सहित विभिन्न योजनाओं के माध्यम से पारंपरिक कारीगरों, स्वयं सहायता समूहों (SHGs) और महिला उद्यमियों का समर्थन करता है।
- नव घोषित प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम योजना का उद्देश्य आदिवासी समुदायों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में सुधार करना है, जिससे 63,000 गांवों में 5 करोड़ लोगों को सीधे लाभ होगा।
- कलादान मल्टीमॉडल परियोजना, भारत-म्यांमार रेल लिंक और त्रिपक्षीय राजमार्ग परियोजना जैसी प्रमुख परियोजनाएँ एनईआर के माध्यम से संपर्क बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष

- पूर्वोत्तर क्षेत्र रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है, जिसमें व्यापक अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ एवं अद्वितीय सामाजिक-राजनीतिक गतिशीलता है।
- विभिन्न पहलों के बावजूद, पूर्वोत्तर क्षेत्र में कनेक्टिविटी को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण चुनौतियाँ बनी हुई हैं, जिन्हें क्षेत्र की पूरी क्षमता को अनलॉक करने के लिए संबोधित करने की आवश्यकता है।
- अविकसितता और हाशिए पर पड़े क्षेत्रों को संबोधित करने और पूर्वोत्तर एवं मुख्य भूमि भारत के बीच वार्तालाप का विस्तार करने के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्र के अंदर सम्बन्ध को मजबूत करने की आवश्यकता है।
- पूर्वोत्तर क्षेत्र में मानव संसाधन और क्षमता निर्माण का विकास बुनियादी ढाँचे के विकास के समानांतर होना चाहिए
- प्रतिभा को अनुकूलित करने और मानव संसाधनों को बढ़ाने के लिए कौशल विकास आवश्यक है।

Source: PIB

भारत का सेमीकंडक्टर(अर्धचालक) बाज़ार 2030 तक 100 बिलियन डॉलर से अधिक हो जाएगा

संदर्भ

- भारत का सेमीकंडक्टर बाज़ार 2030 तक 100 बिलियन डॉलर से अधिक हो जाएगा।

परिचय

- इंडिया इलेक्ट्रॉनिक्स एंड सेमीकंडक्टर एसोसिएशन और काउंटरपॉइंट रिसर्च की एक रिपोर्ट के अनुसार, मोबाइल हैंडसेट एवं आईटी क्षेत्र 75 प्रतिशत से अधिक राजस्व का योगदान देकर बाजार में अग्रणी हैं।
- 2023 में बाजार का मूल्य 45 बिलियन डॉलर था और इसके वार्षिक 13 प्रतिशत की दर से बढ़ने की उम्मीद है।
- यह वृद्धि मजबूत मांग और उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन योजना जैसी सरकारी पहलों से प्रेरित है।
- सेमीकंडक्टर इलेक्ट्रॉनिक्स, रक्षा, स्वास्थ्य सेवा और ऑटोमोटिव उद्योगों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

सेमीकंडक्टर्स क्या हैं?

- सेमीकंडक्टर्स विद्युत गुणों वाले पदार्थ होते हैं जो कंडक्टर (जैसे धातु) और इन्सुलेटर (जैसे रबर) के बीच आते हैं।
    - कुछ स्थितियों में विद्युत का संचालन करने की उनकी एक अद्वितीय क्षमता होती है जबकि अन्य स्थितियों में इन्सुलेटर के रूप में कार्य करते हैं।
- कभी-कभी उन्हें एकीकृत सर्किट (IC) या शुद्ध तत्वों, सामान्यतः सिलिकॉन या जर्मेनियम से बने माइक्रोचिप्स के रूप में संदर्भित किया जाता है।
- डोपिंग नामक एक प्रक्रिया में, इन शुद्ध तत्वों में थोड़ी मात्रा में अशुद्धियाँ डाली जाती हैं, जिससे सामग्री की चालकता में बड़े बदलाव होते हैं।
- **अनुप्रयोग:** अर्धचालकों का उपयोग इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की एक विस्तृत श्रृंखला में किया जाता है।
    - ट्रांजिस्टर, जो आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक सर्किट के मूलभूत घटक हैं, अर्धचालक पदार्थों पर निर्भर करते हैं।
    - वे कंप्यूटर से लेकर सेल फोन तक प्रत्येक वस्तु में स्विच या एम्पलीफायर के रूप में कार्य करते हैं।
    - सेमीकंडक्टर्स का उपयोग सौर कोशिकाओं, LEDs और एकीकृत सर्किट में भी किया जाता है।

सेमीकंडक्टर पर अधिक ध्यान क्यों दिया जा रहा है?

- अर्थव्यवस्था में उनके महत्व को देखते हुए, सेमीकंडक्टर कई देशों के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीतिक उद्योग क्षेत्र बन गए हैं, जहाँ सरकारें और कंपनियाँ प्रतिस्पर्धात्मकता बनाए रखने और नवाचार करने के लिए अनुसंधान एवं विकास में भारी निवेश कर रही हैं।
- 2021 में उन चिप्स की गंभीर कमी ने रेखांकित किया कि वैश्विक उद्योग कुछ प्रमुख आपूर्तिकर्ताओं पर कितना निर्भर है।
- ताइवान वर्तमान में विश्व का सबसे बड़ा चिप निर्माता है, जिसकी वैश्विक बाजार हिस्सेदारी लगभग 44% है, इसके बाद चीन (28%), दक्षिण कोरिया (12%), यू.एस. (6%) और जापान (2%) का स्थान है।
- इस निर्भरता को कम करने के प्रयास में सरकारें मजबूत घरेलू चिप उद्योग बनाने के लिए बड़ी राशि व्यय कर रही हैं।
- भारत इस क्षेत्र में एक बड़ा खिलाड़ी बनना चाहता है, और चीन के साथ प्रतिस्पर्धा तेज कर रहा है। इसने अमेरिका और अन्य सहयोगी देशों को भारत के साथ तकनीकी सहयोग को मजबूत करने के लिए प्रेरित किया है।

भारत के पक्ष में कारक

- **कुशल कार्यबल:** भारत विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM) स्नातकों की रिकॉर्ड संख्या के साथ विश्व में सबसे आगे है, जो सेमीकंडक्टर विनिर्माण, डिजाइन, अनुसंधान और विकास में आवश्यक कुशल कार्यबल प्रदान करता है।
- **लागत लाभ:** भारत कम श्रम लागत, आपूर्ति श्रृंखला दक्षता और उभरते पारिस्थितिकी तंत्र के कारण सेमीकंडक्टर विनिर्माण के लिए पर्याप्त लागत लाभ प्रदान करता है।
- **वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण:** भारत इस उद्योग स्थानांतरण के बीच बैक-एंड असेंबली और परीक्षण संचालन के लिए एक पसंदीदा गंतव्य बन गया है, जिसमें भविष्य के फ्रंट-एंड विनिर्माण की संभावना है।
- **नीति समर्थन:** भारत सरकार ने महामारी के बाद वैश्विक सेमीकंडक्टर आपूर्ति श्रृंखला की अधिकता के बाद तुरंत अवसर का लाभ उठाया है और वैश्विक सेमी आपूर्ति श्रृंखला में चीन के विकल्प के रूप में भारत को प्रस्तुत करने के लिए नीति समर्थन के माध्यम से बहुत इच्छा दिखाई है।

सरकार का समर्थन

- **सेमीकॉन इंडिया:** यह पहल देश में सेमीकंडक्टर और डिस्प्ले विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र के विकास के लिए है।
- इस कार्यक्रम का उद्देश्य सेमीकंडक्टर, डिस्प्ले विनिर्माण और डिजाइन पारिस्थितिकी तंत्र में निवेश करने वाली कंपनियों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है।
- **भारत सेमीकंडक्टर मिशन:** यह डिजिटल इंडिया कॉरपोरेशन के अंदर एक समर्पित प्रभाग के रूप में कार्य करता है।
- इसका मुख्य लक्ष्य इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण और डिजाइन में भारत को एक प्रमुख वैश्विक खिलाड़ी के रूप में स्थापित करने के लिए एक मजबूत सेमीकंडक्टर और डिस्प्ले पारिस्थितिकी तंत्र का पोषण करना है।
- सरकार भारत में विनिर्माण सेटअप के लिए प्रोत्साहन प्रदान करती है:
    - सेमीकंडक्टर फैब योजना के तहत, सभी प्रौद्योगिकी नोड्स के लिए समान स्तर पर परियोजना लागत का 50% राजकोषीय समर्थन।
    - डिस्प्ले फैब योजना के तहत, समान स्तर के आधार पर परियोजना लागत का 50% राजकोषीय समर्थन।
- कंपाउंड सेमीकंडक्टर योजना के तहत, अलग-अलग सेमीकंडक्टर फैब के लिए समर्थन सहित समान स्तर के आधार पर पूंजीगत व्यय का 50% राजकोषीय समर्थन।
- 113 शैक्षणिक संस्थानों/R&D संगठनों/स्टार्ट-अप्स/MSMEs में कार्यान्वित किए जा रहे चिप्स टू स्टार्टअप (C2S) कार्यक्रम के तहत, 85,000 उच्च गुणवत्ता वाले और योग्य इंजीनियरों को कई क्षेत्रों में प्रशिक्षित किया जा रहा है। फरवरी 2024 में, सरकार ने तीन सेमीकंडक्टर प्लांट की स्थापना को मंजूरी दी, जिनमें से दो गुजरात में और एक असम में होगा।

आगे की राह

- डिजिटल तकनीक, AI, IoT और 5G के उदय के साथ, सेमीकंडक्टर की मांग में तीव्रता से वृद्धि हो रही है। भारत, अपने बढ़ते तकनीकी उद्योग के साथ, इस प्रवृत्ति का लाभ उठाने के लिए अच्छी स्थिति में है।

- **विदेशी निवेश:** इंटेल, TSMC और अन्य जैसी प्रमुख वैश्विक कंपनियाँ भारत में अवसर खोज रही हैं। विदेशी निवेश का यह प्रवाह स्थानीय विशेषज्ञता और बुनियादी ढाँचे को विकसित करने में सहायता करेगा।
- **स्टार्टअप इकोसिस्टम:** भारत में सेमीकंडक्टर डिज़ाइन एवं संबंधित तकनीकों पर केंद्रित एक जीवंत स्टार्टअप इकोसिस्टम है, जो नवाचार को बढ़ावा देता है और इस क्षेत्र के समग्र विकास में योगदान देता है।
- **बुनियादी ढाँचा विकास:** सेमीकंडक्टर उद्योग के विकास को सुविधाजनक बनाने के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के लिए विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZ) सहित बेहतर बुनियादी ढाँचा स्थापित किया जा रहा है।
- **प्रतिभा पूल:** भारत में इंजीनियरिंग स्नातकों और कुशल पेशेवरों का एक बड़ा पूल है, जो सेमीकंडक्टर क्षेत्र की कार्यबल आवश्यकताओं का समर्थन कर सकता है।

Source: AIR

पराली जलाने का मुद्दा

समाचार में

- उच्चतम न्यायालय ने पराली जलाने के विरुद्ध सख्त कार्रवाई नहीं करने के लिए हरियाणा और पंजाब की आलोचना की, जिससे उत्तर भारत में वायु प्रदूषण बिगड़ता है।

पराली जलाना क्या है?

- पराली जलाना एक ऐसी प्रथा है जिसमें किसान गेहूं की बुवाई के लिए भूमि तैयार करने के लिए काटे गए धान के खेतों से बचे हुए पुआल को जलाते हैं।
- धान की कटाई और गेहूं की बुवाई के बीच सीमित समय के कारण यह सामान्य बात है।

किसानों ने पराली जलाने का विकल्प क्यों चुना?

- **त्वरित और लागत-कुशल:** यह खेत को तेजी से साफ करता है और किसानों के लिए सबसे कम खर्चीला विकल्प है।
- **खरपतवार और कीट नियंत्रण:** जलाने से खरपतवार, स्लग और कीटों को खत्म करने में सहायता मिलती है जो अगली फसल को हानि पहुंचा सकते हैं।
- **नाइट्रोजन के जमाव को कम करता है:** जलाने से नाइट्रोजन स्थिरीकरण को नियंत्रित करने में सहायता मिल सकती है, जिससे मिट्टी में नाइट्रोजन की उपलब्धता में सुधार होता है।

पराली जलाने के नकारात्मक प्रभाव

- **वायु प्रदूषण:** पराली जलाने से कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, कार्बन मोनोऑक्साइड और वाष्पशील कार्बनिक यौगिक (VOCs) जैसी हानिकारक गैसें निकलती हैं, जो खराब वायु गुणवत्ता और धुंध के निर्माण में योगदान देती हैं, विशेषकर उत्तरी भारत में।
- **मिट्टी का क्षरण:** पराली जलाने से उत्पन्न तीव्र गर्मी मिट्टी के पोषक तत्वों को नष्ट कर देती है, मिट्टी की उर्वरता को कम करती है और लाभकारी सूक्ष्मजीवों को मार देती है, जिससे मिट्टी का दीर्घकालिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है।
- **जलवायु परिवर्तन:** बड़ी मात्रा में ग्रीनहाउस गैसों के निकलने से वायु की गुणवत्ता खराब होती है और ग्लोबल वार्मिंग में योगदान होता है।

अन्य विकल्प

- **धान की पराली पर आधारित बिजली संयंत्र:** फसल के अपशिष्ट का उपयोग ऊर्जा के लिए करते हैं और रोजगार सृजित करते हैं।
- **फसल अवशेषों को शामिल करना:** उन्हें मिट्टी में शामिल करने से मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है, उत्पादकता बढ़ती है और आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति होती है।
- **खाद बनाना:** अवशेषों को जैविक खाद में परिवर्तित कर देता है।

पराली जलाने से रोकने के लिए पहल

- **ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP):** GRAP एक आपातकालीन प्रतिक्रिया तंत्र है जिसे दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में बढ़ते वायु प्रदूषण से निपटने के लिए विकसित किया गया है। इसे वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) के स्तर के आधार पर चरणबद्ध तरीके से लागू किया जाता है।
- **वित्तीय प्रोत्साहन और दंड:** उच्चतम न्यायालय ने पराली जलाने से बचाव करने वाले किसानों को प्रोत्साहन देने और इस प्रथा को जारी रखने वालों पर जुर्माना लगाने या न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) लाभ कम करने का सुझाव दिया है।
- **छत्तीसगढ़ का गौठान मॉडल**: छत्तीसगढ़ में, अप्रयुक्त पराली को एकत्र किया जाता है और सामुदायिक भूखंडों में जैविक खाद में परिवर्तित किया जाता है, जिन्हें गौठान कहा जाता है। यह विधि न केवल प्रदूषण को कम करती है बल्कि रोजगार भी सृजित करती है।

Source: TH

संक्षिप्त समाचार

अंतर्राष्ट्रीय 6G संगोष्ठी/परिसंवाद

संदर्भ

- केंद्रीय संचार मंत्री ने विश्व दूरसंचार मानकीकरण सभा (WTSA-24) के दौरान अंतर्राष्ट्रीय 6G संगोष्ठी का उद्घाटन किया।

परिचय

- संगोष्ठी का उद्देश्य स्थानीय और वैश्विक विकास, अत्याधुनिक अनुसंधान, प्रमुख वास्तुशिल्प सिद्धांतों एवं उभरती प्रौद्योगिकियों का पता लगाना तथा समझना है जो 6G परिदृश्य को आकार देंगे।
- यह कार्यक्रम भारत 6G एलायंस द्वारा आयोजित किया गया है, और 6G प्रौद्योगिकी में वैश्विक नेतृत्व की दिशा में भारत की यात्रा में एक माइलस्टोन है।

भारत 6G एलायंस

- भारत 6G गठबंधन भारतीय उद्योग, शिक्षा, राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थानों और मानक संगठनों की एक सहयोगी पहल है।
- यह नवाचार को बढ़ावा देने और ITU एवं 3GPP (थर्ड जेनरेशन पार्टनरशिप प्रोजेक्ट) जैसी संस्थाओं के माध्यम से वैश्विक 6G मानकों में योगदान करने के लिए विभिन्न हितधारकों को एक साथ लाता है।

Source: PIB

अमृत फ़ार्मेसीज़ (AMRIT Pharmacies)

संदर्भ

- कोल इंडिया की सहायक कंपनी साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (SECL) ने देश की 216वीं अमृत फार्मेसी का उद्घाटन किया।

परिचय

- अमृत फ़ार्मेसीज़ (उपचार के लिए किफ़ायती दवाइयाँ और विश्वसनीय प्रत्यारोपण) 2015 में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा शुरू की गई एक सरकारी पहल है।
- यह अत्यधिक रियायती दरों पर जेनेरिक और जीवन रक्षक ब्रांडेड दवाओं, प्रत्यारोपण एवं सर्जिकल उपभोग्य सामग्रियों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है।
- इस पहल के तहत स्थापित फ़ार्मेसीज़ आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं के साथ-साथ सरकार के सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवा लक्ष्यों को पूरा करती हैं।

Source: PIB

फाइव आइज़ एलायंस

समाचार में

- फाइव आई अलायंस ने कनाडा का समर्थन किया है तथा भारत से कनाडा की विधिक प्रक्रिया में सहयोग करने का आग्रह किया है।

फाइव आई अलायंस के बारे में

- यह एक बहुपक्षीय खुफिया-साझाकरण नेटवर्क है जिसे पाँच अंग्रेज़ी-भाषी देशों - ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूज़ीलैंड, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका की 20 से अधिक विभिन्न एजेंसियों द्वारा साझा किया जाता है।
- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद गठित, यह गठबंधन 1946 के UK-USA समझौते पर आधारित था।
- यह गठबंधन उपग्रहों, टेलीफ़ोन नेटवर्क और फ़ाइबर ऑप्टिक केबल से डेटा को इंटरसेप्ट करने जैसे विभिन्न तरीकों के माध्यम से अपनी व्यापक वैश्विक निगरानी क्षमताओं के लिए जाना जाता है।

Source: TH

हैंड-इन-हैंड पहल

समाचार में

- खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) ने 2024 हैंड-इन-हैंड निवेश फोरम का उद्घाटन किया है।

हैंड-इन-हैंड पहल के बारे में

- यह 2019 में शुरू किया गया खाद्य और कृषि संगठन (FAO) का एक प्रमुख कार्यक्रम है।
- इस पहल का उद्देश्य खाद्य सुरक्षा को संबोधित करने, गरीबी को कम करने और निम्न एवं मध्यम आय वाले देशों में समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए साझेदारी तथा लक्षित निवेश को बढ़ावा देना है।
- इस पहल का उद्देश्य तीन प्रमुख सतत विकास लक्ष्यों (SDG) को प्राप्त करना है:
  - गरीबी उन्मूलन (SDG 1)

- भूख और कुपोषण को समाप्त करना (SDG 2)
- असमानताओं को कम करना (SDG 10)

- भारत हैंड-इन-हैंड पहल में शामिल नहीं हुआ है।

Source: TH

'शून्य दोष, शून्य प्रभाव' पहल

संदर्भ

- केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री ने भारतीय गुणवत्ता प्रबंधन फाउंडेशन (IFQM) संगोष्ठी के दौरान 'शून्य दोष और शून्य प्रभाव' पहल के महत्व पर बल दिया।

'शून्य दोष और शून्य प्रभाव' पहल

- यह MSME मंत्रालय द्वारा 2016 में शुरू की गई एक एकीकृत और व्यापक प्रमाणन प्रणाली है।
- 'शून्य दोष और शून्य प्रभाव (ZED) योजना का उद्देश्य है;
  - नवीनतम तकनीक का उपयोग करके गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के निर्माण के लिए MSMEs को प्रोत्साहित और सक्षम बनाना
  - श्रेणीबद्ध प्रोत्साहनों के माध्यम से MSMEs को उच्च ZED प्रमाणन स्तर प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना
  - "मेक इन इंडिया" अभियान का समर्थन करना।

Source: PIB

रबी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य

संदर्भ

- प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (CCEA) ने विपणन सीजन 2025-26 के लिए सभी अनिवार्य रबी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) में वृद्धि को मंजूरी दे दी है।

MSP

- यह सरकार द्वारा कृषि उत्पादकों को कृषि मूल्यों में किसी भी तीव्र गिरावट के विरुद्ध बीमा प्रदान करने के लिए बाजार में हस्तक्षेप का एक रूप है।
- कृषि लागत और मूल्य आयोग (CACP) की सिफारिशों के आधार पर सरकार द्वारा कुछ फसलों के लिए बुवाई के मौसम की शुरुआत में कीमतों की घोषणा की जाती है।
- इसका मुख्य उद्देश्य किसानों को संकटपूर्ण बिक्री से बचाना और सार्वजनिक वितरण के लिए खाद्यान्न खरीदना है।

MSP के अंतर्गत आने वाली फसलें

- **खरीफ फसलें** (कुल 14) जैसे धान, ज्वार, बाजरा, मक्का, रागी, तूर/अरहर, मूंग, उड़द, मूंगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी, तिल, नाइजर बीज, कपास;
- **रबी फसलें** (कुल 06) जैसे गेहूं, जौ, चना, मसूर/मसूर, रेपसीड और सरसों, और कुसुम;
- **वाणिज्यिक फसलें** (कुल 02) जैसे जूट और खोपरा।

- तोरिया और छिलका रहित नारियल के लिए MSP भी क्रमशः रेपसीड और सरसों और खोपरा के MSP के आधार पर तय किया जाता है।

Source: PIB

मेचाज़िला

समाचार में

- SpaceX ने "मेचाज़िला" नामक एक नई संरचना का उपयोग करके अपने स्टारशिप रॉकेट को सफलतापूर्वक उतारा।

मेचाज़िला के बारे में

- यह दक्षिण टेक्सास में स्पेसएक्स के स्टारबेस पर 400 फीट ऊंची रॉकेट पकड़ने वाली संरचना है।
- यह दो बड़ी यांत्रिक भुजाओं से सुसज्जित है, जिन्हें "चॉपस्टिक" नाम दिया गया है, जो सुपर हैवी बूस्टर को हवा में पकड़ने के लिए डिज़ाइन की गई हैं।
- यह अब तक की सबसे भारी उड़ने वाली वस्तु को पकड़ने के लिए कस्टम-निर्मित है, जिसका वजन लगभग 250 टन है।

मेचाज़िला का महत्व:

- यह अभिनव लैंडिंग तकनीक बूस्टर पर टूट-फूट को कम करती है और इसे बाद के प्रक्षेपणों के लिए तैयार करने में लगने वाले समय को कम करती है।
- त्वरित नवीनीकरण एवं पुन: उपयोग को सक्षम करके, मेचाज़िला लॉन्च लागत को काफी कम करता है और अंतरिक्ष मिशनों की स्थिरता को बढ़ाता है।

Source: BT

ओस्सिफिकेशन टेस्ट

समाचार में.

- NCP नेता बाबा सिद्दीकी की हत्या के मामले में एक आरोपी का ओसिफिकेशन टेस्ट किया गया, ताकि यह पता लगाया जा सके कि वह नाबालिग है या नहीं।

ओस्सिफिकेशन टेस्ट के बारे में

- ओस्सिफिकेशन टेस्ट में कुछ हड्डियों जैसे कि हंसली, उरोस्थि और श्रोणि की एक्स-रे शामिल होती है, ताकि उम्र के साथ होने वाले विकास और विकासात्मक परिवर्तनों का आकलन किया जा सके।
- यह परीक्षण आपराधिक न्याय में महत्वपूर्ण है क्योंकि 18 वर्ष से कम आयु के व्यक्तियों को नाबालिग माना जाता है, तथा विभिन्न कानूनी प्रक्रियाएं दंड के बजाय पुनर्वास पर केंद्रित होती हैं।
- **मुद्दे:** आयु निर्धारण में उपयोगी होते हुए भी, इन परीक्षणों को अत्यधिक सटीक नहीं माना जाता है।
- उच्चतम न्यायालय ने उल्लेख किया है कि रेडियोलॉजिकल परीक्षाएँ मार्गदर्शन प्रदान कर सकती हैं, लेकिन वे निर्णायक साक्ष्य प्रदान नहीं करती हैं। न्यायालय इस बात पर बल देते हैं कि आयु निर्धारण में जन्म प्रमाण पत्र जैसे दस्तावेजी साक्ष्य को ओस्सिफिकेशन टेस्टों पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उच्चतम न्यायालय ने कहा कि ऐसे परीक्षण केवल अंतिम उपाय होने चाहिए।

क्या आप जानते हैं?

- किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2015 में कहा गया है कि नाबालिगों को वयस्कों के साथ कैद नहीं किया जा सकता है और इसके बजाय किशोर न्याय बोर्ड द्वारा निर्धारित परिणाम भुगतने होंगे। 2021 के संशोधन के बाद, गंभीर अपराधों के 16 से ऊपर के आरोपियों को यह तय करने के लिए प्रारंभिक मूल्यांकन से गुजरना पड़ सकता है कि क्या उन पर वयस्कों के रूप में मुकदमा चलाया जाना चाहिए।

Source :IE

INS समर्थ

समाचार में

- भारतीय नौसेना ने समर्थ के प्रक्षेपण के साथ एक महत्वपूर्ण उपलब्धि का जश्न मनाया।

INS समर्थ के बारे में

- इसे विभिन्न भूमिकाओं के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिसमें लक्ष्य को खींचना, लॉन्च करना और पुनर्प्राप्त करना, मानव रहित वाहनों का संचालन एवं स्वदेशी हथियारों का परीक्षण करना शामिल है।
- यह कट्टुपल्ली में एलएंडटी शिपयार्ड में बहुउद्देश्यीय पोत (MPV) परियोजना के तहत पहला जहाज है।
- **महत्व:** यह लॉन्च, सरकार की आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया पहल के अनुरूप है।
  - यह प्रक्षेपण स्वदेशी जहाज निर्माण क्षमताओं को बढ़ाने और समुद्री रक्षा में आत्मनिर्भरता के लिए भारतीय नौसेना की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

Source: ET

राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड(NSG)

संदर्भ

- प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (NSG) को उनके 40वें स्थापना दिवस (16 अक्टूबर 1984) पर बधाई दी है।

परिचय

- सामान्यतः ब्लैक कैट के नाम से जाना जाने वाला NSG सात केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (CAPFs) में से एक है और गृह मंत्रालय के तहत कार्य करता है।
- यह एक कार्य-उन्मुख बल है और इसमें विशेष कार्रवाई समूह (SAG) के रूप में दो पूरक तत्व हैं, जिसमें सेना के जवान और विशेष रेंजर समूह (SRG) शामिल हैं, जिसमें CAPFs/राज्य पुलिस बलों से लिए गए कर्मी शामिल हैं।
- **प्रमुख जिम्मेदारियाँ:** आतंकवाद-निरोध, बंधक बचाव, बम निपटान।
- **प्रमुख ऑपरेशन:** ऑपरेशन ब्लैक थंडर (1986, 1988), ऑपरेशन वज्र शक्ति (2002), ऑपरेशन ब्लैक टॉरनेडो (मुंबई, 2008), ऑपरेशन धांगू सुरक्षा (पठानकोट, 2016)।
- **क्षेत्रीय केंद्र:** NSG वर्तमान में मुंबई, कोलकाता, हैदराबाद, चेन्नई और गांधीनगर में स्थित पांच क्षेत्रीय केंद्रों से संचालित होता है।

- **NSG का वैश्विक प्रभाव:** NSG को जर्मनी की GSG-9 और यूनाइटेड किंगडम की SASजैसी विशिष्ट क्षमताओं के आधार पर तैयार किया गया है।
- **आदर्श वाक्य:** सर्वत्र सर्वोत्तम सुरक्षा (हर जगह सुरक्षा में उत्कृष्टता)।

Source: AIR

ब्लैकबक (एंटीलोप सर्विकाप्रा)

संदर्भ

- ब्लैकबक (एंटीलोप सर्विकाप्रा) भारत का मूल निवासी मृग है, जो कभी अविभाजित भारत के कई हिस्सों में प्रचुर मात्रा में थे।

परिचय

- **आकार:** नर में आकर्षक सर्पिल सींग होते हैं जिनकी लंबाई 75 सेमी (30 इंच) तक हो सकती है, और उनका कोट गहरे भूरे से काले रंग का होता है।
    - मादाएं छोटी होती हैं और उनका कोट बिना सींग के लाल-भूरे रंग का होता है।

- **पर्यावास:** वे सामान्यतः घास के मैदानों, सवाना और खुले जंगलों में पाए जाते हैं। वे चरने के लिए छोटी घास वाले क्षेत्रों को पसंद करते हैं।
- **खतरे:** पहले भारत की रियासतों में बड़े पैमाने पर शिकार, आवास विनाश, आर्थिक उपभोग के लिए अवैध शिकार
- **संरक्षण स्थिति:** IUCN स्थिति: कम से कम चिंता का विषय
- **उद्धरण:** परिशिष्ट III
    - वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 की अनुसूची II
    - पंजाब, हरियाणा और आंध्र प्रदेश का राज्य पशु घोषित।
- **सांस्कृतिक महत्व:** हिंदू धर्म में, काले हिरण को पवित्रता का प्रतीक माना जाता है, इसकी त्वचा और सींगों को पवित्र वस्तुओं के रूप में पूजा जाता है। बौद्ध धर्म में, यह सौभाग्य का प्रतिनिधित्व करता है।

Source: DTE

■■■■